14. शास्त्रकाराः

[भारते वर्षे शास्त्राणां महती परम्परा श्रूयते । शास्त्रणि प्रमाणभूतानि समस्तज्ञानस्य स्त्रोतःस्वरूपाणि सन्ति । अस्मिन् पाठे प्रमुखशास्त्राणां निर्देशपूर्वकं तत्प्रवर्तकानाञ्च निरूपणं विद्यते । मनोरञ्जनाय पाठेऽस्मिन् प्रश्नोत्तरशैली आसादिता वर्तते ।] (शिक्षकः कक्षायां प्रविशति, छात्राः सादरमुत्थाय तस्याभिवादनम् कुर्वन्ति ।)

[भारतवर्ष में शास्त्रों के महान परंपरा सुने जाते हैं। शास्त्र प्रमाण के रूप में समस्त ज्ञान का स्रोत स्वरूप हैं। इस पाठ में प्रमुख शास्त्रों एवं उनके प्रवर्तककों के नाम निर्देश पूर्वक निरूपित हैं। इस पाठ में मनोरंजन के लिए प्रश्नोत्तर शैली अपनाई गई हैं ।] (शिक्षक कक्षा में प्रवेश करते हैं, छात्र आदर सहित खड़े होकर उनका अभिवादन करते हैं ।)

शिक्षकः - उपविशन्तु सर्वे। अद्य युष्माकं परिचयः संस्कृतशास्त्रैः भविष्यति ।

सभी बैठ जाए। आज आपलोगों का परिचय संस्कृत शास्त्रों से होगी ।

युवराजः - गुरूदेव ! शास्त्रं किं भवति ।

गुरूदेव ! शास्त्र क्या होता है ?

शिक्षकः - शास्त्रं नाम ज्ञानस्य शासकमस्ति । मानवानां कर्त्तव्याकर्त्तव्यविषयान् तत् शिक्षयति । शास्त्रमेव अधुना अध्ययनविषयः (Subject) कथ्यते, पाश्चात्यदेशेषु अनुशासनम् (Discipline) अपि अभिधीयते । तथापि शास्त्रस्य लक्षणं धर्मशासत्रेषु इत्थं वर्तते –

शास्त्र का नाम ही ज्ञान का शासक है। वे मानवों के कर्तव्य और अकर्तव्य विषयों की शिक्षा देती है। शास्त्र को ही इस समय अध्ययन का विषय कहा जाता है। पश्चिमी देशों में इसे अनुशासन भी कहा जाता है। वैसे भी शास्त्रों का लक्षण धर्मशास्त्रों में इस प्रकार हैं

प्रवृत्तिर्वा निवृत्तिर्वा नित्येन कृतकेन वा । पुंसां येनोपदिश्यते तच्छास्त्रमभिधीयते ।।

जो वाङ्मय (शास्त्र) मनुष्यों को प्रवृत्ति (काम-वासना) या निवृत्ति (त्याग) मार्ग में, या सदाचार से प्रेरित होकर, मार्गदर्शन करता है, उसे शास्त्र कहा जाता है।

अभिनवः - अर्थात् शास्त्रं मानवेभ्यः कर्त्तव्यम् अकर्त्तव्यञ्च बोधयति । शास्त्रं नित्यं भवतु वेदरूपम्, अथवा कृतकं भवतु ऋष्यादिप्रणीतम् ।

अर्थात शास्त्र मानवों के कर्तव्य और अकर्तव्य का बोध कराती है । शास्त्र वेद के रूप में ऋषि आदि के द्वारा रचित होते हैं।

शिक्षकः- सम्यक् जानासि वत्स! कृतकं शास्त्रं ऋषयः अन्ये विद्वांसः वा रचितवन्तः । सर्वप्रथमं षट् वेदाङ्गानि शास्त्राणि सन्ति । तानि शिक्षा, कल्पः, व्याकरणम्, निरूक्तम्, छन्दः, ज्योतिषं चेति ।

सही जानते हो वत्स ! बनावटी शास्त्र ऋषि तथा अन्य विद्वानों के द्वारा रचित हैं। सर्वप्रथम छः वेदांग शास्त्र हैं। उनमें शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष हैं।

इमरानः - गुरूदेव ! एतेषां विषयाणां के-के प्रणेतारः?

गुरूदेव ये सब विषयों के लेखक कौन-कौन हैं ?

शिक्षकः - श्रृणुत यूयं सर्वे सावहितम् । शिक्षा उच्चारणप्रक्रियां बोधयति । पाणिनीयशिक्षा तस्याः प्रसिद्धो ग्रन्थः । कल्पः कर्मकाण्डग्रन्थः सूत्रात्मकः । बौधायन-भारद्वाज-गौतम-वसिष्ठादयः ऋषयः अस्य शास्त्रस्य रचयितारः । व्याकरणं तु पाणिनिकृतं प्रसिद्धं । निरूक्तस्य कार्य वेदार्थबोधः । तस्य रचयिता यास्कः छन्दः पिङ्गलरचिते सूत्रग्रन्थे प्रारब्धम्। ज्योतिषं लगधरचितेन वेदाङ्ग ज्योतिषग्रन्थेन प्रावर्तत।

सभी छात्र एवं छात्राएँ सावधान होकर सुनें। शिक्षा उच्चारण प्रक्रिया का बोध कराता है। "पाणिनीयशिक्षा" इसका प्रसिद्ध ग्रंथ है। कल्प कर्मकांड सुत्रात्मक ग्रंथ है। बौधायन, भारद्वाज, गौतम, वसिष्ठ आदि ऋषिगण इस शास्त्र के रचनाकार है। व्याकरण तो महर्षि पाणिनि द्वारा रचित प्रसिद्ध हैं। निरूक्त वेद के अर्थों का बोध कराता है। उसका रचनाकार महर्षि यास्क है एवं छन्द महर्षि पिङ्गल द्वारा रचित सुत्रग्रन्थ में प्रारंभ हुआ। ज्योतिष महर्षि लगध द्वारा रचित वेदाङ्गज्योतिषग्रन्थ से प्रारंभ हुआ।

अब्राहमः - किमेतावन्तः एव शास्त्रकाराः सन्ति ?

क्या इतने ही शास्त्रकार हैं?

शिक्षकः - नहि नहि । एते प्रवर्त्तकाः एव। वस्तुतः महती परम्परा एतेषां शास्त्राणां परवर्त्तिभिः सञ्चालिता। किञ्च, दर्शनशास्त्राणि षट् देशेऽस्मिन् उपक्रान्तानि ।

नहीं नहीं। येसब प्रवर्तक ही हैं। वास्तव में शास्त्रों का महान परंपरा है येसब शास्त्र प्रवर्तकों के द्वारा संचालित है। और कुछ दर्शनशास्त्र छः देशों में आरंभ हुए ।

श्रुतिः - आचार्यवर ! दर्शनानां के-के प्रवर्तकाः शास्त्रकाराः ?

आचार्यवर दर्शन शास्त्रों के प्रवर्तक व शास्त्रकर कौन-कौन हैं।

शिक्षकः- सांख्यदर्शनस्य प्रवर्तकः कपिलः। योगदर्शनस्य पतञ्जलिः। एवं गौतमेन न्यायदर्शनं रचितं कणादेन च वैशेषिकदर्शनम्। जैमिनिना मीमांसादर्शनम्, बादरायणेन च वेदान्तदर्शनं प्रणीतम् । सर्वेषां शताधिकाः व्याख्यातारः स्वतन्त्रग्रन्थकाराश्च वर्तन्ते ।

सांख्यदर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल है। योग दर्शन के महर्षि पतंजलि एवं महर्षि गौतम के द्वारा न्यायदर्शन और महर्षि कणाद के द्वारा वैशेषिक दर्शन का रचना किया गया। महर्षि जैमिनि द्वारा मीमांसादर्शन और बादरायण द्वारा वेदांतदर्शन का रचना किया गया है। सभी सौ से अधिक व्याख्याता और स्वतंत्रग्रंथकार हैं।

गार्गी - गुरूदेव ! भवान् वैज्ञानिकानि शास्त्राणि कथं न वदति ?

गुरूदेव! आप वैज्ञानिक शास्त्र को क्यों बोलते हैं ?

शिक्षकः- उक्तं कथयसि। प्राचीनभारते विज्ञानस्य विभिन्नशाखानां शास्त्राणि प्रावर्तन्त । आयुर्वेदशास्त्रे चकरसंहिता, सुश्रुतसंहिता चेति शास्त्रकारनाम्मैव प्रसिद्धे स्तः । तत्रैव रसायनविज्ञानम्, भौतिकविज्ञानञ्च अन्तरर्भू स्तः । ज्योतिषशास्त्रेऽपि खगोलविज्ञानं गणितम् इत्यादीनि शास्त्राणि सन्ति । आर्यभटस्य ग्रन्थः आर्यभटीयनामा प्रसिद्धः । एवं वराहमिहिरस्य बृहत्संहिता विशालो ग्रन्थः यत्र नाना विषयाः समन्विताः । वास्तुशास्त्रमपि अत्र व्यापं शास्त्रमासीत्। कृषिविज्ञानं च पराशरेण रचितम् । वस्तुतो नास्ति शास्त्रकाराणाम् अल्पा संख्या ।

सही कहते हो। प्राचीन भारत में विज्ञान के विभिन्न शाखा शास्त्र से प्रारंभ हुआ । आयुर्वेद शास्त्र में चकरसंहिता और सुश्रुतसंहिता ये शास्त्रकारों के नाम से प्रसिद्ध हैं। वहीं रसायन विज्ञान और भौतिक विज्ञान अन्तरर्भूत हैं। ज्योतिष शास्त्र में भी खगोल विज्ञान, गणित इत्यादि शास्त्र हैं। आर्यभट्ट का

ग्रन्थ "आर्यभटीय" नाम से प्रसिद्ध है। इसप्रकार वराहमिहिर के वृहत्संहिता विशाल ग्रंथ है। इसमें अनेक विषय सम्मिलित है। यहाँ वास्तुशास्त्र भी व्यापक शास्त्र था । कृषिविज्ञान के रचनाकार महर्षि पराशर है। वास्तव में शास्त्रकारों के संख्या कम नहीं है।

वर्गनायकः - गुरुदेव ! अद्य बहुज्ञातम् । प्राचीनस्य भारतस्य गौरवं सर्वथा समृद्धम् । (शिक्षकः वर्गात् निष्क्रामति । छात्राः अनुगच्छन्ति ।)

गुरूदेव! आज बहुत ज्ञात हुआ। प्राचीन भारत का गौरव सर्वथा समृद्ध रहा है ।

1. वेदाङ्ग कितने है? उनके प्रवर्तकों एवं शास्त्रों के नाम लिखें। अथवा, वेदाङ्ग के नाम लिखें। अथवा, 'वेदाङ्ग" संख्या में कितने हैं ?

उत्तर- वेदाङ्ग छः हैं-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष । शिक्षा उच्चारण प्रक्रिया का बोध कराता है। इसके प्रवर्तक पाणिनी है। कल्प अंग में सूत्रात्मक कर्मकाण्ड ग्रन्थ है, जिसके प्रवर्तक बौधायन, भारद्वाज, गौतम, वशिष्टआदि ऋषि है। निरुक्त वेद अर्थ का बोध कराता है, इसके प्रवर्तक यास्क है। छन्द अङ्ग सूत्र ग्रन्थ हैं, जिसके प्रवर्तक पिङ्गल हैं तथा ज्योतिष अङ्ग के प्रवर्तक लगधर ऋषि हैं।

2. वेद कितने हैं ? सभी के नाम लिखें।

उत्तर- वेद चार हैं, इनके नाम इस प्रकार से हैं-ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद ।

3. शास्त्रकाराः पाठ के आधार पर संस्कृत की विशेषता बताएँ ।

उत्तर- संस्कृत ज्ञान का समुद्र है। यह देववाणी है। यह कर्त्तव्य औरअकर्त्तव्य की शिक्षा देती है। वेदांत भी संस्कृत रूप है। योगदर्शन, न्यायदर्शन, मीमांसादर्शन आदि सभी संस्कृत की व्यापकता ही है। आर्यभट्टीय विज्ञान, गणित की पृष्ठभूमि है। भारतीय शास्त्रकार प्रायः संस्कृत में ही लिखित है

4. 'शास्त्रकाराः' पाठ के आधार पर शास्त्र की परिभाषा अपनेशब्दों में लिखें। अथवा, गुरु के द्वारा शास्त्र का क्या लक्ष्य बताया गया है अथवा, शास्त्र क्या है ?

उत्तर- शास्त्र ज्ञान का शासक है। वह मनुष्यों के कर्त्तव्य एवं अकर्त्तव्य विषयों की शिक्षा देता है। शास्त्र ही इस समय अध्ययन का विषय कहा जाता है। पाश्चात्य देशों में इसे अनुशासन भी कहा जाता है। इस प्रकार, आसक्ति अथवाविरक्ति, नित्य अथवा कृत्रिम की शिक्षा मनुष्यों को जिससे दिया जाता है, वहशास्त्र है।

5. भारतीय शास्त्र कारों का परिचय दें।

उत्तर - आयुर्वेद में चरक संहिता सुषुप्त संहिता आदि शस्त्र का विश्व प्रसिद्ध है खगोल ज्ञान में आर्यभट्ट बड़ा हमीरा प्रसिद्ध है बताया भारद्वाज गौतम वरिष्ठ आदि ऋषियों ने शास्त्रों की रचना की है तथा पाणिनि कृतज्ञ व्याकरण विश्व प्रसिद्ध है अत: मकर

6. 'शास्त्रकारा:' पाठ में प्रश्नोत्तर शैली अपनाने से हमें क्याशिक्षा मिलती है ?

उत्तर-'शास्त्रकारा:' पाठ में प्रश्नोत्तर शैली अपनाने से हमें यह शिक्षा मिलती है कि शास्त्रों का ज्ञान करना कठिन है, किन्तु उसका ज्ञान मनोरंजन द्वारा हल और शीघ्र हो जाता है। प्रश्नोत्तर शैली में प्रश्न और उत्तर सहित सहज भावमें होते हैं। इस पाठ में प्राचीन शास्त्रों का ज्ञान शास्त्र की परिभाषा, भारतीय वैज्ञानिक का वर्णन, दर्शन शास्त्रों तथा व्याकरण के प्रवर्तकों की जानकारी इस शैली में छात्रों को आसानी से होती है।

7. विज्ञान की शिक्षा देनेवाले शास्त्र का परिचय दें।

उत्तर- प्राचीन भारत में विज्ञान की विभिन्न शाखाओं की पुस्तकों की रचना हुई। आयुर्वेदशास्त्र में चरक संहिता और सुश्रुत तो शास्त्रकार के नाम से ही प्रसिद्धहै। वही रसायन विज्ञान और भौतिक विज्ञान अन्तर्भुत हैं। ज्योतिश शास्त्र में खगोल विज्ञान, गणित इत्यादि शास्त्र हैं। आर्यभट्ट की पुस्तक आर्यभट्टीयम् नामसे विख्यात है। वास्तुशास्त्र भी यहाँ व्यापक शास्त्र है। कृषि विज्ञान पराशर केद्वारा रचित है।

8. ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत कौन-कौन शास्त्र है तथा उनके प्रमुख ग्रन्थ कौन से हैं ?

उत्तर- ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत खगोल विज्ञान, गणित इत्यादि शास्त्र है। उनके प्रमुख ग्रंथ आर्यभट्ट रचित 'आर्यमहिमा' और वराहमिहिर रचित वृहत्संहिता आदि है।

9. कल्प ग्रन्थों के प्रमुख रचनाकारों का नामोल्लेख करें।

उत्तर-कल्प ग्रन्थों के प्रमुख रचनाकार बोधायन, भारद्वाज, गौतम, वशिष्ठ, आदि ऋषि है।

10. शास्त्रकाराः पाठ में वर्णित वैज्ञानिक शास्त्रों पर प्रकाश अथवा, भारतीय वैज्ञानिक शास्त्रकारों की संक्षेप में करें।

उत्तर- प्राचीन भारत में अनेक वैज्ञानिक ऋषि थे। जिन्होंने विज्ञान सम्बन्धी रचनाएँ लिखीं। आयुर्वेद शास्त्र में चरक विरचित 'चरक संहिता' एवं सुश्रुत संहिता' अति प्रसिद्ध है। इनमें रसायन विज्ञान एवं भौतिक विज्ञान का भी वर्णन है। आर्यभट्ट का आर्यभट्टीय अति प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसमें अनेक विषयों का वर्णन है। कृषि विज्ञान के रचयिता महर्षि पराशर है। इसमें वैज्ञानिक कृषिका वर्णन है। इस प्रकार भारतीय वैज्ञानिक शास्त्रकार किसी भी क्षेत्र में अन्य देशों से कम नहीं है।

11. आयुर्वेद के प्रमुख ग्रन्थ कौन-कौन है ?

उत्तर- आयुर्वेद शास्त्र के प्रमुख दो चिकित्सकों चरक और सुश्रुत के द्वाराआयुर्वेद शास्त्र में चरकसंहिता और सुश्रुत संहिता प्रमुख ग्रन्थ है।

12. शास्त्र मनुष्यों को किन-किन चीजों का बोध कराता है ?

उत्तर- शास्त्र मनुष्यों को काव्य और अकर्तव्य का बोध कराता है। कृत्रिम शास्त्र अर्थात् ऋषियों द्वारा लिखे गए शास्त्र तथा वेद स्वरूप शास्त्र अर्थात् ईश्वर-प्रदत्त शास्त्र का भी बोध कराता है। 'रामायण' कृत्रिम शास्त्र तथा 'वेद' वेद स्वरूप शास्त्र है। इसके अतिरिक्त शास्त्र वेदाङ्ग तथा दर्शन एवं वैज्ञानिक शास्त्रों का भी बोध कराता है।

13. भारतीय दर्शनशास्त्र एवं उनके प्रवर्तकों की चर्चा करें।

उत्तर- सांख्य दर्शन के संस्थापक कपिल, योग-दर्शन के पतंजलि, न्यायदर्शन के गौतम, वैशेषिक दर्शन के कणाद ऋषि, मीमांसा दर्शन के जैमिनी और वेदान्त दर्शन के संस्थापक वादायण है।

IMPORTANT OBJECTIVE QUESTION

1. व्याकरण के रचनाकार कौन है?

(A) चाणक्य

(B) पाणिनि

(C) कालिदास

(D) भास

Ans – (B)

2. 'शास्त्रकारा: ' किस प्रकार का पाठ है?

(A) वार्तालाप

(B) निबंध

(C) कथा

(D) नाटक

Ans – (A)

3. शास्त्र मानवों को किसका बोध कराता है?

(A) हर्तव्य

(B) धर्तव्य

(C) कर्तव्याकर्तव्य

(D) मन्तव्य

Ans – (C)

4. वेदरूपी शास्त्र क्या होता है?

(A) अनित्य

(B) नित्य

(C) कृत्य

(D) भृत्य

Ans – (B)

5. शास्त्र किसके लिए कर्त्तव्य और अकर्तव्य का विधान करते हैं?

(A) दानवों के लिए

(B) मानवों के लिए

(C) छात्रों के लिए

(D) पशुओं के लिए

Ans – (B)

6. शास्त्र किसके द्वारा रचित है?

(A) दानव

(C) छात्र

(B) शिक्षक

(D) ऋषियों

Ans – (D)

7. शास्त्र किसको कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का बोध कराता है?

(A) मानव

(B) दानव

(C) देवता

(D) मूर्ख

Ans – (A)

8. “कृषि विज्ञान" के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) पाणिनि

(B) कपिल

(C) पराशर

(D) गौतम

Ans – (C)

9. "मीमांसादर्शन" के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) कपिल

(B) पराशर

(C) गौतम

(D) जैमिनी

Ans – (D)

10. "चरक संहिता" की रचना किसने की?

(A) कपिल

(B) माघ

(C) चरक

(D) गौतम

Ans – (C)

11. "आर्यभट्टीयनामा" ग्रंथ किनका है?

(A) आर्यभट्ट

(B) गौतम

(C) चरक

(D) पराशर

Ans – (A)

12. "योगदर्शन" के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) बौधयायन

(B) पतंजलि

(C) पिंगल

(D) चरक

Ans – (B)

13. 'निरुक्त' के रचयिता कौन हैं?

(A) यास्क

(B) लगध

(C) गौतम

(D) पराशर

Ans – (A)

14. न्यायदर्शन के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) कपिल

(B) गौतम

(C) कणाद

(D) पतञ्जलि

Ans – (B)

15. वराहमिहिर द्वारा रचित कौन-सा ग्रन्थ है?

(A) आचार संहिता

(B) विचार संहिता

(C) बृहत्संहिता

(D) मंत्रसंहिता

Ans – (C)

16. ऋष्यादि प्रणीत को क्या कहते हैं?

(A) भृतक

(B) मृतक

(C) कृतक

(D) हृतक

Ans – (C)

17. ऋषि गौतम ने किस दर्शन की रचना की?

(A) सांख्य दर्शन

(B) न्याय दर्शन

(C) योग दर्शन

(D) चन्द्र दर्शन

Ans – (B)

18. निरुक्त का क्या कार्य है?

(A) यथार्थ बोध

(B) वेदार्थ बोध

(C) अर्थ बोध

(D) तत्व बोध

Ans – (B)

19. महर्षि यास्क द्वारा रचित ग्रंथ का नाम क्या है?

(A) निरूक्तम्

(B) शुल्ब सूत्र

(C) न्यायादर्शन

(D) चरक संहिता

Ans – (A)

20. सभी छात्र किसका अभिवादन करते हैं?

(A) छात्र

(B) पिता

(C) शिक्षक

(D) प्राचार्य

Ans – (C)

21. सांख्यदर्शन के प्रवर्तक कौन हैं?

(A) कणाद

(B) पाणिनि

(C) विष्णुशर्मा

(D) कपिल

Ans – (D)

22. किसके छः अंग हैं?

(A) व्याकरण

(B) वेद

(C) पुराण

(D) ईश्वर

Ans – (B)

23. भारतवर्ष में किसकी महती परम्परा सुनने को मिलता है?

(A) सामाजिक

(B) ग्रंथ

(C) शास्त्रों की

(D) व्याकरण

Ans – (C)

24. पाणिनि ने किसकी रचना की?

(A) ग्रंथ

(B) व्याकरण

(C) दर्शन

(D) पुराण

Ans – (B)

25. वेदरूप शास्त्र क्या होते हैं?

(A) ज्ञान

(B) धर्म

(C) सत्य

(D) नित्य

Ans – (D)

26. मनोरंजन के लिए 'शास्त्रकारा' पाठ किस शैली में है?

(A) गद्य

(B) पद्य

(C) प्रश्नोत्तर

(D) नाटक

Ans – (C)

27. कक्षा में कौन प्रवेश करते हैं?

(A) छात्र

(B) शिक्षक

(C) प्राचार्य

(D) अभिभावक

Ans – (B)

28. छात्र किसके शास्त्रों से अवगत होगा ?

(A) हिन्दी

(B) कन्नड़

(C) मैथिली

(D) संस्कृत

Ans – (D)

29. ज्ञान का शासक कौन है?

(A) अस्त्र

(B) वेद

(C) शास्त्र

(D) ग्रंथ

Ans – (C)

30. मनुष्यों को कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य की शिक्षा कौन देती है?

(A) मुनि

(B) शास्त्र

(C) पुस्तक

(D) छात्र

Ans – (B)

31. वेदों के कितने अंग हैं?

(A) छः

(B) पाँच

(C) सात

(D) आठ

Ans – (A)

32. शिक्षा क्या बोध कराता है?

(A) काल

(B) उच्चारण क्रिया

(C) स्वर

(D) समास

Ans – (B)

33. कल्प किस प्रकार का ग्रंथ है?

(A) कर्मकाण्ड

(B) पुराण

(C) वेद

(D) कथा

Ans – (A)

34.कर्मकांड का वर्णन करने वाले ग्रंथ कौन हैं?

(A) शिक्षा

(B) कल्प

(C) व्याकरण

(D) निरुक्त

Ans – (B)

35. 'छात्राणाम् ..... तपः' रिक्त स्थान में कौन पद होगा?

(A) शयनम्

(B) भ्रमणम्

(C) अध्ययनम्

(D) ध्यानम्

Ans – (C)

36. पिंगल किस वेदाङ्ग शास्त्र के प्रवर्तक आचार्य हैं?

(A) ज्योतिष

(B) छन्द

(C) कल्प

(D) व्याकरण

Ans – (C)

37. चरक और सुश्रुत ने किस शास्त्र का प्रवर्तन किया?

(A) आयुर्वेदशास्त्र

(B) वास्तुशास्त्र

(C) ज्योतिषशास्त्र

(D) कृषि विज्ञान

Ans – (A)

38. 'बृहत्संहिता' के रचनाकार कौन हैं?

(A) वराहमिहिर

(B) आर्यभट्ट

(C) वादरायण

(D) कणादं

Ans – (A)